

सर्व जीवन कल्प संधि

हरिकथामृडितसार गुरुगळ
करुणदिंदापनितु पैळुवे
परम भगवद्धक्तरिदनादरदि कैळुवुदु

कृइतिरमण प्रद्युम्न वसुदे
वतेगळाहंकारत्रयदोळ
चतुरविंशति रूपदिंदलि भोज्यनेनिसुवनु
हुतवहाआंतगत जया
पतियु ताने मूरधिक त्रिं
शति सुरूपदि भोक्तृइ एनिसुव भोक्तृइगळोळगिद्दु ०१

आरधिक मूवतु रूपदि
वारिजाप्तनोळिरुतिहनु मा
यारमण श्रीवासुदेवनु कालनामदलि
मूरु विध पितृगळोळु वसु त्रिपु
रारि आदित्यगनिरुद्धनु
तौरिकोळळदे कथृकमक्रियनेनिसिकोम्ब ०२

स्ववश नारायणनु ता ष
ण्णवति नामदि करेसुतलि वसु
शिव दिवाकर कथृकमक्रियगळोळगिध्दु
नेवनविल्लुदे नित्यदलि त
न्नवरु माडुव सेवे कैकों
डवर पितृगळिगीवनमथानमथ सुखगळनु ०३

तंतुपटदंददलि लकुमीकांत
पंचात्मकनेनिसि वसु
कंतुहर रवि कथृगळोळगिध्धनवरथ तन्न
चिंतिसुव संतरनु गुरु मध

वांतरात्म संतयिसुवनु
संततखिळाथगळ पालिसि इहपरंगळलि ०४

तंदेताय्याळ प्रीतिगोसुग
निंघकमव तोरेदु विहितग
ळोंदु मीरदे संगकमगळाचरिसुववरु
वंदनीयरागिलेयोळगे दै
नंदिनदि दैशिक दहिक सुख
दिंद बाळवरु बहु दिवसदलि कीतियुतरागि ०५

अंशि अंशांतगत त्रय
हंसवाहन मुख्य दिविजर
संशदलि तिळिदंतरात्मक जनादनन
संस्मरण पूवकदि षडधिक
त्रिंशतित्रय रूपवरितु वि
पांसगन पूजिसुवरवरे कृथाठरेनिसुवरु ०६

मुरुवरे साविरद मेलरे
नूरैदु रूपदि जनादन
सूरिगळु माडुव समाराधनेगे विघ्नगळु
बारदंते बहुप्रकार ख
रारि कापाडुवनु सवश
रीरगळोळिद्वरवर पेसरिद करेसुतलि ०७

जय जय जयाकांत दत्ता
त्रैय कपिल महिदास भक्त
प्रिय पुरातन पुरुष पूणानमध ज्झन्यानघन
हयवदन हरि हंस लोक
त्रय विलअण निखिळजगदा
श्रय निरामय दयदि संतैसेंदु प्राथिपुदु ०८

षण्णवति येंबअरेढ्यनु
षण्णवति नामदलि करेसुत
तन्नवरु सद्धक्ति पूवकदिंद माडुतिह
पुण्यकमव स्वीकरिसि का
रुण्य सागर सलहुवनु ब्र
ह्मण्य देव भवाब्धिपोत बहु प्रकारदलि ०९

देहगळनु कोडुववनु अवरव
राहरवनु कोडादिहने सुमनस
महित मंगळ चरित सद्गुणभरितननवरत
अहिक पारत्रिक सुखप्रद
वहिसि बेन्नलि बेत्तवमृथव
द्रुहिण मोदलादवरिगुणिसिद मुरिदनहितरनु १०

द्रुहिण मोदलादमररिगे स
न्महित मायारमण ताने
स्वहनेनिसि सम्थृप्थिपदिसुव सवकालदलि
प्रहित संकरुषनु पिथृगळि
गहरनेनिप स्वधाख्यरूपदि
महिज फलथृण पेसरिनलि प्रद्युम्निरुद्ध ११

अन्ननेनिसुव नृपशुगळिगे
हिरण्य गभांडदोळु संतत
तन्ननीपरियिंदुपासनेगैव भक्तरन
बन्न पडिसदे भवसमुद्रम
होन्नतिय दाटिसि चतुविध
अन्नमयनात्मप्रदरहन सुखवनीव हरि १२

मनवचन कायगळ देशेयिं
दनुदिनदि बिडदाचरिसुति
प्पनुचितोचित कमगळ सद्धक्तिपूवकदि

अनिलदेवनोळिप्प नारा
यणगिदन्नवु एंदु कृष्णा
पणवेनुत कोडे स्वीकरिसि संतैप करुणाळु १३

ऐळ विधदन्न प्रकरणव
कैळि कोविदरास्यदिंदलि
आलसव माडदले अनिरुद्धादि रूपगळ
कालकालदि नेनेदु पूजिसु
स्थूलमतिगळिगिदनु पैळदे
श्रीलकुमिवल्लभने अन्नादन्न अन्नदनु १४

एंदरिदु सप्तान्नगळ दै
नंदिनदि मरेयदे सदा गौ
विंदगपिसु निभयदि महयज्झन्यविधुयेम्धु
इंदिरेशनु स्वीकरिसि दय
दिंद बैडिसिकोळदे तवकदि
तंदुकोडुवनु परममंगळ तन्न दासरिगे १५

सूजि करदलि पिडिदु समरव
ना जयिसुवेनु एंब नरनं
ती जगत्तिनोळुळळ अज्झन्यानिगळु नित्यदलि
श्री जगत्पतिचरणयुगळ
सरोज भक्थिज्झन्यानपुवक
पूजिसदे धमाहकामव बयसि बळलुवरु १६

शकटभंजन सकलजीवर
निकटगनु तानागि लौकके
प्रकटनागदे सकलकमव माडि माडिसुत
अकुटिलात्मक भकुत जनरिगे
सुखदनेनिसुव सवकालदि
अकटकट ईतन महामहिमेगळिगेनेंबे १७

श्रीलकुमिवल्लभनु वैकुं
ठालयदि प्रणव प्रकृथि की
लालजासन मुख्य चेतनरोळगे नेलेसिद्दु
मूलकारण अंशनामदि
लीलेगैसुत तौरिकोळ्ळदे
पालिनोळु घृथविध्द तेरेदंतिप्प त्रिस्थळदि १८

मूरु युगदलि मूलरूपनु
सूरिगळ संतयिसि दितिय कु
मारकर संहरिसि धमवनुळुहबेकेंदु
कारुणिक भूमियोळु निजपरि
वारसहितवतरिसि बहुविध
तौरिदनु नरवथप्रवृथ्थिय सकल चेतनके १९

कारणाव्हय प्रकृथियोळगि
ध्धारधिक हदिनेंटु तत्वव
ता रचिसि तद्रूप तन्नामंगळने धरिसि
नीरजभवांडवनु निमिसि
कारुणिक कायाख्यरूपदि
तौरुवनु सहजाहिताचलगळलि प्रतिदिनदि २०

जीवरंतयामि अंशि क
ळेवरगळेळगिंद्रियगळलि
ता विहार गैवृतनुदिन अंशनामदलि
ई विषयगळनुंडु सुखमय
ईव सुख संसारदुःखव
देव मानव दानवारिगविरत सुधामसख २१

देश देशव सुत्ति देहा
यासगोळिसदे काम्यकम दु

राशेगोळगागदले ब्रह्माद्यखिळचेतनरु
भू सलिलपावकसमीरा
काश मोदलादखिळ तत्त्व प
रेशगिवधिष्ठानवेंदरितचिसनवरत २२

एरडु विधदलि लोकदोळु जी
वरुगळिप्परु संतत क्षराक्षर
विलिंग सलिंग सृज्यासृज्य भेददलि
करेसुवुदु जदप्रकृथि प्रणवा
अर महादणुकालनामदि
हरि सहित भेदगळ पंचक स्मरिसु सवत्र २३

जीव जीवर भेद जड जड
जीव जडगळ भेद परमनु
जीव जड सुविलअणनु एंदरिदु नित्यदलि
ई विरिंचांडदोळु एल्लु
ठाविनलि तिळिदैदु भेद क
ळेवरदोळरितच्युतन पदयैदु शीघ्रदलि २४

आदियलि अराअराख्य
द्वेध अअरदोळु रमा मधु
सूदनरु अरगळोळु प्रकइति प्रणव कालगळु
वेध मुख्य थृणाम्थ जीवर
भेदगळनरिती रहस्यव
बोधिसदे मंदरिगे सवत्रदलि चिंतिपुदु २५

दीपदिं दीपगळु पोरम
ट्टापणालयगत तिमिरगळ
ता परिहारगैसि तद्रतपदाथ तौपंते
सौपरणिवरवहन ता बहु
रूपनामदि एल्लु कडेयलि

व्यापिसिद्दु यथेष्टमहिमेय तोप तिळिसदले २६

नळिनमित्रगे इंद्रधनु प्रति
फलिसुवंते जगत्रयवु कं
गोळिपुदनुपाधियलि प्रतिबिंबाव्हयदि हरिगे
तिळिये त्रिककुद्धामनति मं
गळ सुरूपव सवठाविलि
पोळेव हृदयके प्रितिदिवस प्रह्लादपोषकनु २७

रसविशेषदोळति विमल सित
वसन तोयिसि अग्रियोळगिडे
पसरिसुवुदु प्रकाश नसुगुंददले सवत्र
त्रिशिरदूषणवैरि भक्तिसु
रसदि तोयद महात्परनु बा
धिसवु भवदोळगिदरेयु सरि दुरितरासिगळु २८

वारिधियोळगखिळ नदिगळु
बेरेबेरे निरंतरदलि वि
हार गैवुत परम मोददलिप्प तेरनंते
मूरु गुणनगळ मानियेनिसुव
श्रीरमारूपगळु हरियलि
तोरुतिप्पवु सवकालदि समरहितवेनिसि २९

कोकनद सखनुदय घूका
लोकनके सोगसदिरे भास्कर
ता कळंकने ई कृथिपथि जगन्नाथनिरे
स्वीकरिसि सुखबडलरियदवि
वैकिगळु निंदिसिदरेनहु
दी कवित्वव केळि सुखबडदिहरे कोविदरु ३०

चेतनाचेतनगळलि गुरु

मातरिश्वांतगत जग
न्नाथ विठल निरंतरदि व्यापिसि तिळिसिकोळदे
कातुरव पुट्टिसि विषयदलि
यातुधानर मोहिसुव नि
भीत नित्यानंदमय निदोष निरवद्य ३१

www.yousigma.com